Consumption Function

Q. Discuss psychological law of consumption function. What are the factors affecting it?

Keynes ने अपनी पुस्तक "The General theory of Employment, Interest and money" में रोजगार स्तर के निर्धारण के लिए सामूहिक मांग तथा सामूहिक पूर्ति की अवधारणाओं का प्रयोग किया। सामूहिक मांग के दो घटक होते हैं एक उपभोग और दूसरा विनियोग।

केन्स के अनुसार किसी अर्थव्यवस्था का कुल उपभोग मुख्य रूप से आय पर निर्भर करता है अर्थात

$$C = f(Y)$$

इस प्रकार उपभोग एवं आय का सम्बन्ध उपभोग फलन कहलाता है। उपभोग फलन (Consumption function) बताता है कि आय के स्तर में वृद्धि होने पर उपभोग में प्रत्यक्ष वृद्धि होती है लेकिन आय के उत्तरोत्तर बढ़ने पर उपभोग की वृद्धि आय की वृद्धि से कम होती है। उपभोग की इस प्रवृत्ति को केन्स ने उपभोग का मनोवैज्ञानिक नियम का नाम दिया है।

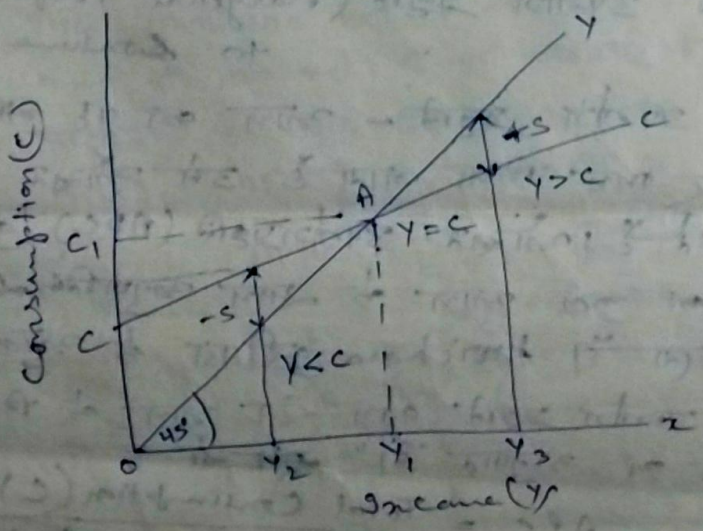

उपर्युक्त चित्र में आय स्तर के शून्य होते हुए भी OC न्यूनतम उपभोग का स्तर है क्योंकि जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओं का न्यूनतम उपभोग आवश्यक होता है। A बिन्दु पर आय तथा उपभोग बराबर हैं तथा आय स्तर OY_2 पर आय से उपभोग ज्यादा है और आय स्तर OY_3 पर आय उपभोग से अधिक है।

आय में वृद्धि होने पर उपभोग में कितनी वृद्धि होगी यह उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। केन्स ने उपभोग फलन के लिए उपभोग प्रवृत्ति शब्द का प्रयोग किया है। Dilland डिलार्ड के अनुसार "आय के विभिन्न स्तरों पर उपभोग की विभिन्न मात्राओं को प्रकट करने वाली अनुसूची को उपभोग प्रवृत्ति कहा जाता है।" Dillard ने इसे निम्न चित्र से प्रस्तुत किया है-

उपर्युक्त चित्र में आय बढ़ रहा है लेकिन उपभोग आय के अनुपात में कम बढ़ रहा है।

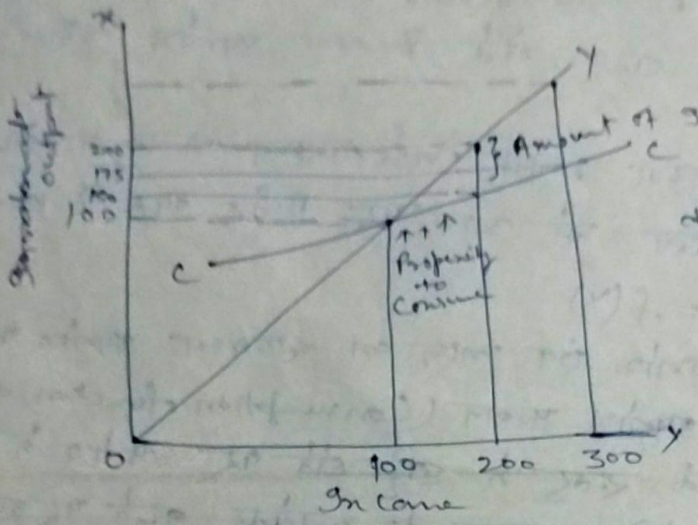

केन्स के अनुसार उपभोग प्रवृत्ति दो भागों में बाँटा जा सकता है—

(1) औसत उपभोग प्रवृत्ति (Average Propensity to consume)

(2) सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to consume)

(1) औसत उपभोग प्रवृत्ति - आय का वह भाग जो उपभोग पर व्यय किया जाता है उसे औसत उपभोग प्रवृत्ति कहते है। औसत उपभोगप्रवृत्ति (APC) कुल उपभोग का कुल आय के साथ अनुपातिक सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। Kurihara कुरीहारा के अनुसार "औसत उपभोग प्रवृत्ति व्यय एवं आय के किसी भी विशेष स्तर का अनुपात है।" सूत्र से

$$APC = \frac{\text{Total Consumption }(C)}{\text{Total Income }(Y)}$$

यदि आय स्तर 150 करोड़ रुपये है जिसमें से 100 करोड़ उपभोग पर व्यय होते हैं तब

$$APC = \frac{C}{Y} = \frac{100}{150} = .66$$

अर्थात अर्थव्यवस्था के आय का .66% भाग उपभोग पर व्यय किया जाता है।

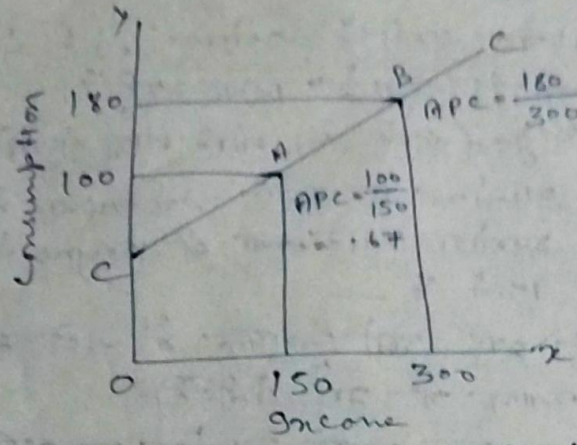

चित्र में CC उपभोग वक्र है। इस वक्र के बिन्दु A पर APC = 0.67% और B बिन्दु APC = .60%

2. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (Marginal Propensity to Consume)

कुल उपभोग स्तर में परिवर्तन का कुल आय में परिवर्तन का अनुपात सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति कहलाता है। कुरीहारा के अनुसार "सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति उपभोग में होने वाले परिवर्तन तथा आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात है।"

सूत्र से :-

$$MPC = \frac{\text{Change in Consumption} (\Delta C)}{\text{Change in Income} (\Delta Y)}$$

यदि आय 100 करोड़ रु. से बढ़कर 200 करोड़ हो जाती है तो आय में 100 करोड़ रु का परिवर्तन हुआ। आय में परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोग 80 करोड़ से बढ़कर 120 करोड़ हो जाता है तो उपभोग में 40 करोड़ रु का परिवर्तन हुआ तो

$$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y} = \frac{40}{100} = 0.4$$

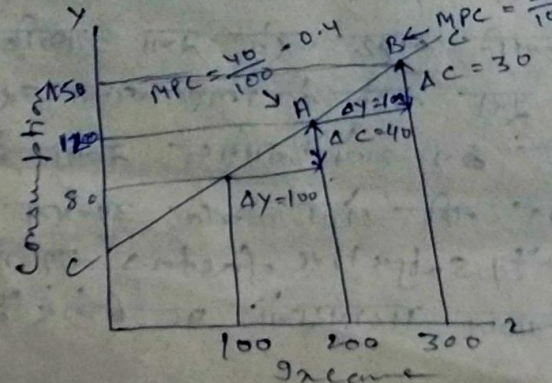

उपर्युक्त चित्र में आय के परिवर्तन से उपभोग में परिवर्तन के अनुपात को दर्शाया गया है।